IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेस एवं पत्रकारिता – पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी की भूमिका

[1] डॉ. दीपक कुमार, [2]लक्ष्मी कुमारी

[1]सहायक प्रध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, [2] प्रवक्ता, योग एवं मानव चेतना विभाग,

[1] देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

शोध सारांश:

विश्व स्तर पर एक ब्रह्मर्षि के रूप में पहचाने जाने वाले पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी मानव जाति के साथ-साथ सभी जीवधारियों के बीच शांति, सद्भावना, सद्भाव और समझ के स्वर्ण युग के आसन्न उदय के एक प्रख्यात द्रष्टा, ऋषि, संत एवं समाज सुधारक थे जिनकी प्रेरणाएं आज के समय में मनुष्यों को सही दिशाधारा प्रदान कर रही हैं। आचार्य जी ने जाति, लिंग, मत, संप्रदाय इत्यादि के आधार पर बिना भेदभाव किये सभी लोगो को गायत्री महामंत्र के महत्व को जानने और समझने में मदद की। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने एक महान समाज सुधारक के रुप में अपना पूरा जीवन आत्म-अन्वेषण, आत्म-जागरूकता और आत्म-पारस्परिकता का मार्ग बनाने में बिता दिया। आचार्य जी की विशिष्ट उत्कृष्टता उनके चेतन और अचेतन मन के माध्यम से लोगों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षमता के प्रोत्साहन की बात करती है। दशकों पहले शुरू हुए एक व्यक्ति के दृढ़ संकल्प ने लाखों लोगों को गायत्री परिवार के सदस्य के रुप में स्वीकार किया और आज करोड़ों सदस्यों के योगदान के माध्यम से विस्तार कर रहा है। किसने सोचा था कि उत्तर प्रदेश के एक गाँव, आंवलखेड़ा में जन्मा एक साधारण बालक एक समय युग निर्माण की आंधी ले आएगा और विश्व को सही दिशा दिखाने में अपना बहुमूल्य योगदान दे जाएगा। भले ही आचार्य जी का जन्म एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था, लेकिन वे शुरू से ही आम जनता के विकास और कल्याण के लिए तत्पर रहते थे। जब "छुट-अछूत" (अस्पृश्यता) की संकट देश मे हावी था, उस संकट के घड़ी में भी उन्होंने बिना किसी भेद भाव के जन कल्याण हेतु सदैव स्वयं ही सेवा के समाज सेवा के लिए तत्पर रहते थे।

कूट शब्द - गायत्री परिवार, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रेस एवं पत्रकारिता, सकारात्मक पत्रकारिता

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन परिचय –

बचपन से ही माँ गायत्री के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा से वह परुपूर्ण थे। यू तो उन्होंने स्कूली शिक्षा नही ली मगर पंडित मदन मोहन मालवीय ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार कर गायत्री मंत्र की दीक्षा दी। 15 साल की उम्र से 24 साल की उम्र तक हर साल 24 लाख बार गायत्री मंत्र का जप किया। 1927 से 1933 तक स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। वे घरवालो के विरोध के बावजूद कई समय तक भूमिगत कार्य करते रहे और समय आने पर जेल भी गए। जेल में भी अपने साथियों को शिक्षण दिया करते थे और वे वहां से अंग्रेजी सिखकर लौटे थे। जेल में उन्हें देवदास गाँधी, मदन मोहन मालवीय, और अहमद किदवई जैसे लोगो का मार्ग दर्शन मिला। इसी सुसंगती के वजह से उन्हें समझ आया जनसंचार का महत्व। वैसे तो उन्होंने आधिकारिक रूप से पढ़ाई नही की मगर उनके लेखनी एवं कार्यो में पत्रकारिता एवं जनसंचार की झलकियां देखने को मिलती है। गायत्री महामंत्र के संचार से लेकर सद्विचारों तक का संचार उनके द्वारा लिखे गए साहित्य को देखने पर मिलता है। बौद्धिक विकास के वर्तमान युग में प्रेरक साहित्य की क्षमता और इसकी प्रासंगिकता को

महसूस करते हुए, उन्होंने लोगों के मन से बुरी प्रवृत्तियों और अंध विश्वास को दूर करने और स्थायी ज्ञान, शक्ति और आध्यात्मिक आनंद को जगाने के लिए लेखन को प्रमुख विधा के रूप में चुना था।

उन्होंने 1939 में "अखंड ज्योति" के पहले अंक के साथ विचार क्रांति के अनूठे आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने जो पहली पुस्तक लिखी वह थी "मैं क्या हु?" जिसमें आत्मज्ञान की शिक्षा के विषय में बात की गई है।

उन्होंने मानव जीवन से संबंधित लगभग सभी विषयों, पहलुओं पर हिंदी में लगभग 3400 ज्ञानवर्धक पुस्तकें लिखीं है। आचार्य जी की प्रत्येक पुस्तक मील के पत्थर के रुप में समाज को आज भी मार्गदर्शित कर रही हैं, ज्ञान और स्वअनुशासन के प्रतीक स्तंभ के समान भी प्रतीत होती हैं। परम पूज्य गुरुदेव की वाक्पटुता, तार्किक योग्यता, प्रामाणिक संदर्भ, दृष्टांत, अनुभव और व्यापक चर्चाएँ पाठकों के मनोविज्ञान को गहराई से आकर्षित करती हैं। शायद यही कारण है कि आचार्य जी के साहित्य को विभिन्न बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि वाले जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों ने खूब सराहा है।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी के स्पष्ट विश्लेषण और मार्गदर्शन में भ्रम या गलत धारणा के लिए कोई जगह नहीं है। गुरुदेव के चरित्र का आध्यात्मिक प्रभाव और अखंडता, उनके कार्यों के साथ उनके शब्दों के सामंजस्य, उनकी भावनाओं की शुद्धता और उनकी कलम की प्रेरक शक्ति को जोड़ती है जिससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने युग निर्माण योजना की नींव पत्रकारिता एवं जनसंचार को हथियार बनाकर रखी थी। आचार्य जी ने 4 वेद, 108 उपनिषद, 18 पुराण आदि का हिंदी में अनुवाद किया है। ज्ञान और मानव संस्कृति की दुनिया में इस अमूल्य योगदान को डॉ. एस राधाकृष्णन और आचार्य विनोबा भावे जैसे संतों द्वारा अत्यधिक प्रशंसित और सराहा गया। इसकी मान्यता में उन्हें "वेदमूर्ति" की विशिष्ट उपाधि से सम्मानित किया गया था।

वर्तमान परिस्थितियों में जब अच्छे और प्रेरक साहित्य की बहुत कमी है तब ऐसे समय में शांतिकुंज के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखित भाष्यों जिसमें चार वेद, अठारह पुराण, 108 उपनिषद, छह दर्शन, चौबीस गीता, आरण्यक थे आज के समय में समाज को प्रकाश किरण प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान जीवन की विघ्नकारी समस्याओं का व्यावहारिक समाधान प्रदान करने की दृष्टि से उपयुक्त साहित्य परम पूज्य गुरुदेव की शिक्षाओं को ध्यान में रखकर निरंतर लिखा जा रहा है।

पत्रकारिता- दैनिक सैनिक पत्रिका

आचार्यश्री सन्1927 से 1928 में श्री कृष्ण दत्त पालीवाल के 'सैनिक' अखबार में सक्रिय सहयोग देने लगे। पत्र के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के त्याग, बलिदान एवं सत्याग्रह का प्रचार-प्रसार होता था। 'मत्त प्रलाप' स्तंभ में छपे लेखों तथा गीतों द्वारा आचार्यश्री ज्वाला भड़काने का काम करते थे।

जिन दिनों उत्साह का वातावरण था, उन दिनों तो सैनिक पत्र की धूम मची हुई थी। आंदोलन की सूचना देने वाला यह प्रमुख माध्यम था। आचार्यश्री ने पहले ही दिन अखबार के ढाई पृष्ठ अकेले तैयार किये। पूरा अंक चार पृष्ठ का निकलता था। आचार्यश्री ने समाचार संकलन करने से लेकर उन्हें लिखने, कम्पोज करने, पूरफ पढ़ने के मोर्चों पर अपने आपको झोंक दिया। आचार्यश्री की निष्ठा ने सैनिक कार्यालय में ऊर्जा भर दी। जो कर्मचारी अपना काम छोड़कर जा रहे थे, वे वापस होने लगे, उनमें साहस का संचार हुआ। संपादक श्री पालीवाल ने आचार्यश्री की पीठ थपथपाते हुए कहा 'सैनिक' को उसका सेनापति मिल गया।

दीवार संस्करण-

सन् 1932 में एक बार अंग्रेजों की शक्ति एवं पहरे पर बैठ जाने के कारण सैनिक का प्रकाशन संभव नहीं था। आचार्यश्री ने सरकंडे की कलम से पोस्टरनुमा कागजों पर समाचार लिखना शुरू किया। पहली प्रति आचार्यश्री ने तैयार की। उसकी प्रतिलिपियां तैयार हुई। बीस-पचीस प्रतियां तैयार हुई, तो उन्हें आगरा के विभिन्न इलाकों के दीवारों पर चिपकाने की योजना बनी। उद्देश्य यह था कि सैनिक की उपस्थिति प्रतीत होती रहे।

अखंड ज्योति पत्रिका -

अखंड ज्योति के प्रथम पृष्ठ पर छपने वाली निम्न पंक्तियां बताती हैं-

‘‘सुधा बीज बोने से पहले, कालकूट पीना होगा।

पहन मौत का मुकुट सहित मानव को जीना होगा।’’

सन्1937 से अखंड ज्योति पत्रिका का पहले आगरा से प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके बाद सन् 1940 से आज तक पत्रिका अखंड ज्योति संस्थान मथुरा से प्रकाशित होती है। 250 की संख्या से आरंभ हुई। अब 10 लाख से अधिक (सात अन्य भाषाओं में)छपती है। अध्यात्म तत्व दर्शन का शास्त्रोक्त एवं विज्ञान सम्मत प्रतिपादन इससे होने लगा। भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रतीकों का मर्म समझाना प्रारंभ किया। गंगा, गायत्री, गीता और गौ का महत्व समझाते हुए स्वास्तिक, तुलसी, प्रतिमा, देवालय, तीर्थ, पर्व त्यौहार आदि का विवेचन करते हुए बाद में संस्कारों की प्रक्रिया पर लेखनी चलाई।

आचार्य जी का लेखन कार्य –

युगऋषि के संदेशों के आलोक में भारत और विदेशों में लाखों लोगों को अपने स्वयं के जीवन और पूरे समाज को बदलने के लिए मिशनरी उत्साह और जोश से भर दिया गया है। उन्होंने स्वेच्छा से गायत्री जयंती पर अपने भौतिक आवरण को त्याग दिया लेकिन दृश्य से उनके भौतिक प्रस्थान के बाद भी मिशन वैश्विक आयामों में फैल गया और 47 अश्वमेध यज्ञ (भारत में 38, यूके, यूएसए, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया सहित विदेशों में 9) युगऋषि द्वारा शुरू किए गए कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए किए गए थे।

उन्होंने संपूर्ण वैदिक वाङ्मय का स्पष्ट हिंदी में अनुवाद किया और जीवन के सभी पहलुओं पर हिंदी में 3,200 से अधिक ज्ञानवर्धक पुस्तकें लिखने की उपलब्धि हासिल की। उनके लेखन में आज की असंख्य समस्याओं के दूरगामी, दूरदर्शी और व्यावहारिक समाधान शामिल हैं। गायत्री परिवार शांतिकुंज आश्रम (गायत्री परिवार का मुख्यालय), ब्रह्मवर्चस अनुसंधान संस्थान जो अध्यात्म के साथ विज्ञान को साथ लेकर चलने का प्रयास करता है, अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा, गायत्री तपोभूमि, मथुरा और दुनिया भर में हजारों सामाजिक सुधार और साधना केंद्र (शक्ति पीठ) में आचार्य जी का महान योगदान हैं। एक बार भविष्य विज्ञानी के रूप में पंडित श्रीराम शर्मा जी ने भविष्य की भविष्यवाणी करने की अनूठी क्षमता का प्रदर्शन किया था। पिछले दशक के दौरान, जब "शीत युद्ध" अपने चरम पर था, उन्होंने तीसरे विश्व युद्ध की असंभवता, परमाणु अप्रसार और स्टार-वॉर कार्यक्रम की विफलता के बारे में सटीक भविष्यवाणी की थी। वैश्विक महत्व की उनकी कुछ भविष्यवाणियां भी सच हुई हैं और उनके साहित्य में प्रकाश डाला गया है।

आचार्य जी के द्वारा कही गयी बातों से समझ आता हैं कि कैसे उन्होंने पत्रकारिता को जन-जन को शिक्षित करने के एक बेमिसाल और अनूठे प्रयोग के तौर पर अपनाया है। उन्होंने कहा है कि "मनुष्य एक अनगढ़ पत्थर है, जिसे शिक्षा रूपी छेनी ओर हथौड़ी से सुंदर आकृति प्रदान की जा सकती हैं।"

"जो शिक्षा मनुष्य को परावलम्बी, अहंकारी और धूर्त बनाती हो, वह शिक्षा, अशिक्षा से भी बुरी है।" "जिस शिक्षा में समाज और राष्ट्र के हित की बात नहीं हो, वह सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती।" आचार्य जी के इन्हीं विचारों का समग्र रुप उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तको में दिखाई देता है।

निष्कर्ष-

युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी की सम्पूर्ण जीवनी से हमें यही देखने को मिलता है कि कैसे उन्होंने तलवार से नही बल्कि कलम की धार से विश्व मे परिवर्तन की लहर को हवा दी। वेदमाता गायत्री को अपनी मार्गदर्शक और पत्रकारिता को हथियार बनाकर उन्होंने 3200 से अधिक ज्ञानवर्धक पुस्तकों एवं प्राचीन वैदिक साहित्य का भाष्य लिखा और युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एक महान व्यक्तिव के रुप में स्थापित हो गए। उनके जीवनी से यह पत्रकारिता की ताकत आज भी साफ साफ झलकती है। यहां तक की उन्होंने विश्व कल्याण की नींव उस वक़्त इतनी मज़बूत कर दी थी कि उसकी लहर आज भी युवाओं को उर्जावान और सकारात्मकता से

भर देती है। गायत्री के एक महान भक्त श्री राम शर्मा जी ने 80 वर्षों तक एक आदर्श जीवन व्यतीत किया और 2 जून 1990 को गायत्री जयंती पर स्वेच्छा से अपने भौतिक म्यान को त्याग दिया। उन्होंने व्यक्ति, परिवारों और समाज को बदलने और सुधारने के लिए कुछ बुनियादी सूत्र दिए हैं। गुरुदेव की शिक्षाएं हमें दूसरों को सलाह देने के बजाय आत्म-सुधार पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करती हैं।

संदर्भ सूची-

पण्ड्या, डॉ. प्रणव, चेतना की शिखर यात्रा, भाग-1,पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2011पृष्ठ 220.21

पण्ड्या, डॉ. प्रणव, चेतना की शिखर यात्रा, भाग-1,पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2011पृष्ठ 224

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, विचार क्रांति के दीपयज्ञ, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2012

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, प्रज्ञा पुराण, खण्ड 1 से 5, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2012

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, नवयुग का मत्स्यावतार, थोड़ा ही सही नियमित करें, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, प्रेरणाप्रद द्रष्टांत, वाङ्मय-67, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2012

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, युग निर्माण योजना- दर्शन, स्वरूप एवं कार्यक्रम, वाङ्मय-66, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2012

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे?, वाङ्मय-65, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1998

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने?, वाङ्मय-64, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1998

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, विचारसार एवं सूक्तियां, प्रथम एवं द्वितीय खंड, वाड्मय 69 एवं 70 अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2012

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, हमारी वसीयत और विरासत, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2014

कर्ण, डॉ. विजय कुमार, सेवा चेतना, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य विशेषांक, जनवरी-जून 2011, लखनऊ

ब्रह्मवर्चस्, ब्रह्मकमल, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज हरिद्वार, 2011

शर्मा, भगवती देवी, युग चेतना को व्यापक बनाने का प्रयत्न, अखण्ड ज्योति, जनवरी 1988, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, पूज्यवर की अमृतवाणी, भाग एक, वाड्मय 68, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2012

ब्रह्मवर्चस्, जीवन के सिद्ध सूत्र अमृत वचन, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2011

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, ऋषिचिंतन के सानिध्य में, युग निर्माण योजना प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा,2012

पण्ड्या, डॉ. प्रणव, चेतना की शिखर यात्रा, भाग-1, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2011

आचार्य, पं0 श्रीराम शर्मा, भाषण और संभाषण की दिव्य क्षमता, युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा, 2006

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, शब्दब्रह्म-नादब्रह्म, वाङ्मय-19, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2013

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन, वाङ्मय-1, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2013

आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, समय की मांग युग नेतृत्व, युग निर्माण योजना प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा

सिंह डॉ. श्रीकान्त, सम्प्रेषण : प्रतिरूप एवं सिद्धान्त, भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

संचारः अवधारणा, प्रक्रिया एवं सिद्धांत, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

सिंह, प्रो. सुखनन्दन, आध्यात्मिक पत्रकारिता, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, 2020

डॉ. संजीव भनावत- पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम

मिश्र, डॉ. विजय कुमार, मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता और युग पत्रकार पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, शिशिर प्रकाशन, मेरठ, 2007

Kumar, J. Keval. (2012). Mass Communication In India. Jaico Publication House

Halavais & Petrick, Joe. (2006). Communication Theory. Free Software Foundation

MTDTraining. (2010). Effective Communication Skills. MTD Publications

Sharma, Aparna. (2016). key management from Bhagavad Gita. People and Management(Vol.7). Noida

Patnaik, B.N. Gandhi as a Communicator. Indian Institute of Technology Kanpur